ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

संघर्ष से सफलता तक:
रौशनी देवी की प्रेरक कहानी
(पृष्ठ – 02)

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक:
ललिता देवी की नई शुरुआत
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना से
बदली मुनिया दीदी की जिंदगी:
संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक की यात्रा
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – मार्च 2026 ।। अंक – 56

सतत् जीविकोपार्जन योजना और समावेशी आजीविका योजना:
ग्रामीण गरीबों के जीवन में परिवर्तन की नई दिशा

गरीबी उन्मूलन और समावेशी विकास को बढ़ावा देने में ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी दिशा में कई ऐसी योजनाएँ लागू की गई हैं जिनका उद्देश्य निर्धन परिवारों, विशेषकर महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और उन्हें सतत् जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़ना है। बिहार में वर्ष 2018 में शुरू की गई सतत् जीविकोपार्जन योजना तथा केंद्र सरकार द्वारा क्रियान्वित समावेशी आजीविका योजना इसी प्रयास का महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना का उद्देश्य अत्यंत निर्धन और वंचित परिवारों को गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकालना और उन्हें स्थायी जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़ना है। यह योजना मुख्य रूप से उन परिवारों पर केंद्रित है जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं और जिनके पास आय के स्थायी स्रोत उपलब्ध नहीं हैं। जीविका ग्राम संगठनों के माध्यम से इन परिवारों की पहचान की जाती है और उन्हें चरणबद्ध तरीके से सहायता प्रदान की जाती है।

इस योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को आर्थिक सहायता, प्रशिक्षण, जीविकोपार्जन से संबंधित संसाधन और निरंतर मार्गदर्शन दिया जाता है। कई परिवारों ने इस सहायता से किराना दुकान, बकरी पालन, गाय पालन, खेती, सिलाई जैसे छोटे व्यवसाय शुरू किए हैं। धीरे–धीरे इन गतिविधियों से उनकी आय बढ़ने लगी और वह आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़े है। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ, बल्कि उनका आत्मविश्वास और सामाजिक सम्मान भी बढ़ा है। आज बिहार के हजारों परिवार इस योजना के माध्यम से गरीबी से बाहर निकलकर बेहतर जीवन की ओर बढ़ रहे हैं।

इसी दिशा में ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समावेशी आजीविका योजना शुरू की गयी है। यह योजना दीनदयाल अन्त्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत एक विशेष पहल के रूप में क्रियान्वित की जा रही है। इसका उद्देश्य उन अत्यंत संवेदनशील और वंचित परिवारों तक पहुँचना है जो अभी तक स्वयं सहायता समूह तथा अन्य सरकारी योजनाओं से पूरी तरह नहीं जुड़ पाए हैं।

समावेशी आजीविका योजना वैश्विक स्तर पर सफल माने जाने वाले "ग्रेजुएशन अप्रोच" पर आधारित है। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत अत्यंत गरीब परिवारों को चरणबद्ध तरीके से सहायता देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ाया जाता है। योजना के माध्यम से लाभार्थियों को सामाजिक सुरक्षा, कौशल विकास, वित्तीय सहायता, आजीविका प्रशिक्षण और संस्थागत सहयोग प्रदान किया जाएगा। इसके साथ ही उन्हें स्वयं सहायता समूहों और अन्य सरकारी योजनाओं से भी जोड़ा जाएगा, जिससे उनका समग्र विकास सुनिश्चित हो सके।

सतत् जीविकोपार्जन योजना और प्रस्तावित समावेशी आजीविका योजना दोनों का उद्देश्य समान है, अत्यंत गरीब और वंचित परिवारों को मुख्यधारा से जोड़ना और उन्हें जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़ना है। इन योजनाओं के माध्यम से महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त बन रही हैं, परिवारों की आय बढ़ रही है और ग्रामीण समाज में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। वर्तमान में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत 02 लाख से अधिक परिवार लाभान्वित है।

यह पहल केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण समाज में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और समावेशी विकास की नई राह भी दिखा रही हैं। सही मार्गदर्शन, सामुदायिक सहयोग और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से यह प्रयास लाखों गरीब परिवारों के जीवन में स्थायी परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से बदली बीबी जूही की जिंदगी

मजबूत इरादे इंसान को हर कठिनाई से पार पाने की शक्ति देती हैं और आगे बढ़ने का रास्ता दिखाती हैं। भागलपुर जिला के सोनहौला प्रखंड अंतर्गत भूरिया महियमा पंचायत के करहरिया गाँव की निवासी बीबी जूही खातून की कहानी इसी बदलाव की मिसाल है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर उन्होंने अपने जीवन की दिशा ही बदल दी।

एक समय ऐसा था जब उनका परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। सीमित आय के कारण रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करना कठिन था और कई बार दो वक्त का भोजन जुटाना भी चुनौती बन जाता था। लेकिन जीविका से जुड़ने और योजना का लाभ मिलने के बाद उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव हुई, जिसने पूरे परिवार में नई उम्मीद जगाई।

योजना के अंतर्गत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि प्रथम चरण में 16,000 रुपये, द्वितीय चरण में 27,000 रुपये, तृतीय चरण में 40,000 रुपये की परिसंपत्ति तथा जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में 1,000 रुपये प्रति माह की दर से कुल 7,000 रुपये की सहायता प्राप्त हुई। कुल मिलाकर लगभग एक लाख रुपये की इस राशि ने उनके सपनों को साकार करने का मजबूत आधार प्रदान किया।

इस सहयोग से उन्होंने सबसे पहले एक छोटी किराना दुकान की शुरुआत की। धीरे–धीरे इस व्यवसाय से होने वाली आय ने उनका आत्मविश्वास बढ़ाया। किराना दुकान के साथ साथ उन्होंने बकरी पालन और कपड़ों की सिलाई का कार्य भी शुरू किया। इन तीनों जीविकोपार्जन गतिविधियों से प्राप्त नियमित आय ने उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना दिया।

आज बीबी जूही खातून आत्मसम्मान के साथ अपने परिवार की सभी जरूरतों को पूरा कर रही हैं। उनके बच्चों की शिक्षा उनके लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता है। उनकी एक बेटी डी.एल.एड. की पढ़ाई कर रही है, दूसरी बेटी दसवीं कक्षा में है और बेटा बी. फार्मा की पढ़ाई कर रहा है।

बीबी जूही खातून का मानना है कि यदि उन्हें जीविका और सतत् जीविकोपार्जन योजना का सहयोग नहीं मिला होता, तो यह बदलाव संभव नहीं हो पाता।

संघर्ष से सफलता तक: रौशनी देवी की प्रेरक कहानी

अररिया जिले के कुर्साकांटा प्रखंड अंतर्गत कुआरी पंचायत के भिमपुर खार गाँव की निवासी रौशनी देवी आज अपनी मेहनत के बल पर आत्मनिर्भर बन चुकी हैं। नारी शक्ति जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर उन्होंने अपने जीवन में बदलाव की नई शुरुआत की। जीविका से जुड़ने के बाद उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की एक नई यात्रा शुरू हुई।

एक समय ऐसा था जब उनका परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। पति चंदन पासवान के साथ मिलकर वह दूसरों के खेतों में मजदूरी कर किसी तरह परिवार का भरण–पोषण करती थीं। दो छोटे बेटे और एक बेटी की जिम्मेदारी के बीच सीमित आय में घर चलाना बेहद कठिन था। बीमारी जैसी स्थिति में तो हालात और भी ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो जाता था।

उनकी स्थिति को देखते हुए ग्राम संगठन द्वारा उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया। योजना के तहत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि प्रथम चरण में 16,000 रुपये की परिसंपत्ति तथा जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में 1,000 रुपये प्रति माह की दर से कुल 7,000 रुपये की सहायता प्राप्त हुई। इस प्रकार उन्हें कुल 33,000 रुपये की सहायता मिली।

जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत उन्होंने सबसे पहले बकरी पालन की शुरुआत की। धीरे–धीरे बकरियों की संख्या बढ़ी और उनके बच्चे अच्छी कीमत पर बिकने लगे, जिससे उनकी आय में लगातार वृद्धि होने लगी। इसके बाद उन्होंने अपनी बचत से एक गाय खरीदी और दूध बेचना शुरू किया। साथ ही उन्होंने दस कट्ठा खेत पट्टे पर लेकर खेती का कार्य भी आरंभ किया।

आज रौशनी देवी के पास आय के कई स्रोत हैं, बकरी पालन, गाय पालन और खेती, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति पहले की तुलना में काफी सुदृढ़ हो गई है। अब वह अपने बच्चों की शिक्षा और बेहतर भविष्य को लेकर अधिक सजग हैं। रौशनी देवी का कहना है कि जीविका और सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दिया।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से बदली सविता देवी की जिंदगी

अरवल जिले के सोनभद्र प्रखंड अंतर्गत बंशी पंचायत के अनुआन गाँव की निवासी सविता देवी का जीवन कभी अत्यंत संघर्षपूर्ण था। पार्वती जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उनके जीवन में बदलाव की शुरुआत हुई। पति के निधन के बाद सविता देवी के सामने परिवार के भरण–पोषण की बड़ी जिम्मेदारी आ गई थी। सीमित आय और बड़े परिवार के कारण कई बार ऐसी स्थिति बन जाती थी कि परिवार को भूखे पेट सोना पड़ता था। मजदूरी ही उनकी आय का एकमात्र सहारा थी, जिससे घर की जरूरतें और बच्चों की पढ़ाई दोनों प्रभावित हो रहा था।

उनकी आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया। योजना के तहत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि प्रथम चरण में 20,000 रुपये, द्वितीय चरण में 27,000 रुपये, तृतीय चरण में 45,000 रुपये की परिसंपत्ति तथा जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में 1,000 रुपये प्रति माह की दर से कुल 7,000 रुपये की सहायता प्राप्त हुई। कुल 1,09,000 रुपये की इस राशि ने उनके जीवन में बदलाव का नई दिशा दी।

इस सहायता से उन्होंने सबसे पहले एक किराना दुकान की शुरुआत की। दुकान से होने वाली आमदनी ने उनके जीवन में स्थिरता लानी शुरू की। परियोजना के मार्गदर्शन से उन्होंने अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया। आय बढ़ने के साथ उन्होंने बकरी और गाय पालन का कार्य भी शुरू किया और बाद में ग्राम संगठन के सहयोग से एक ऑटो खरीद लिया, जिससे उनकी आय के स्रोत और बढ़ गयी।

आज सविता देवी की कुल मासिक आय लगभग 15,000 रुपये है, किराना दुकान से 6,000 रुपये, पशुपालन से 4,000 रुपये और ऑटो संचालन से 4,000 रुपये। उनके बच्चे नियमित रूप से स्कूल जा रहे हैं और परिवार की सभी जरूरतें अब आसानी से पूरी हो रही हैं। आज सरिता देवी खुशहाल जीवन जी रही है।

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक: ललिता देवी की नई शुरुआत

बांका जिले के बेलहर थाना अंतर्गत घुठिया गाँव की निवासी ललिता देवी एक साधारण परिवार से आती हैं। पति स्वर्गीय दामोदर सिंह और तीन बच्चों के साथ उनका जीवन किसी तरह गुजर रहा था। वर्ष 2017 में रोजगार की तलाश में उनके पति पुणे गए, लेकिन एक दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। इस घटना ने परिवार को गहरे सदमें एवं आर्थिक संकट में डाल दिया। रोजमर्रा का जीवन चलाना भी मुश्किल हो गया।

इन कठिन परिस्थितियों में ललिता देवी और उनकी बेटी दूसरों के घरों में काम कर किसी तरह परिवार का भरण–पोषण करने लगीं। वर्ष 2018 में वह जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और कर्ज लेकर बेटी की शादी कराई, लेकिन इससे आर्थिक बोझ और बढ़ गया। वर्ष 2021 में उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत हुआ, जिसने उनके जीवन में बदलाव की नई राह खोली।

योजना के तहत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये, जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में 1,000 रुपये प्रति माह की दर से कुल 7,000 रुपये तथा जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 20,000 रुपये की परिसंपत्ति प्राप्त हुए। इस सहायता से उन्होंने एक छोटा किराना दुकान शुरू की, जिससे उनकी आय धीरे–धीरे बढ़ने लगी। साथ ही उन्होंने नियमित बचत शुरू की और कुछ समय बाद बकरी पालन तथा गाय पालन भी शुरू की।

आज ललिता देवी किराना दुकान, पशुपालन और खेती के माध्यम से नियमित आय अर्जित कर रही हैं। वर्तमान में उनकी मासिक आय लगभग 7,500 से 8,500 रुपये तक है और उनकी कुल संपत्ति लगभग 99,800 रुपये हो गयी है। उनका बेटा अपनी पढ़ाई जारी रखे हुए हैं, जो उनके लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है।

ललिता देवी की कहानी यह दर्शाती है कि सही समय पर मिला सहयोग, निरंतर मेहनत और दृढ़ संकल्प किसी भी कठिन परिस्थिति को सफलता में बदल सकता है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से बदली मुनिया दीदी की जिंदगी: संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक की यात्रा

कटिहार जिले के मनिहारी प्रखंड अंतर्गत उत्तरी कांटाकोश पंचायत के मुजवर गाँव की निवासी मुनिया दीदी आज अपने संघर्ष, साहस और आत्मविश्वास की एक उदाहरण हैं। अनुसूचित जाति वर्ग से ताल्लुक रखने वाली मुनिया दीदी शिव गुरु जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं और जीवन ज्योति ग्राम संगठन तथा जागरूक संकुल स्तरीय के संघ की भी सदस्य है। उनके परिवार में पाँच बेटियाँ, एक बेटा सहित कुल सात सदस्य हैं, जिनकी जिम्मेदारी उनके कंधो पर है।

जीविका से जुड़ने से पहले उनका जीवन बेहद कठिन और संघर्षपूर्ण था। उनके पति मजदूरी कर किसी तरह परिवार का भरण–पोषण करते थे, लेकिन परिवार की जरूरतें पूरी नहीं हो पाती थीं। कुछ वर्षों बाद पति के असामयिक निधन ने उनकी जिंदगी को पूरी तरह बदल दिया। पाँच बेटियों और एक बेटे की जिम्मेदारी अकेले संभालना उनके लिए किसी चुनौती से कम नहीं था। आर्थिक तंगी इतनी गंभीर थी कि कई बार परिवार के सदस्यों को भूखे पेट सोना पड़ता था। बच्चों की पढ़ाई, उनका भविष्य और रोजमर्रा की जरूरतें, सब कुछ एक साथ संभालना उनके लिए बेहद कठिन हो गया था।

ऐसी परिस्थितियों में जीविका ने उनकी स्थिति को देखते हुए उन्हें स्वयं सहायता समूह से जोड़ा। समूह की दीदियों और सामुदायिक संसाधन सेवियों के सहयोग से उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा मिला। वर्ष 2021 में सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये की सहायता प्रदान की गई। साथ ही ग्राम संगठन द्वारा उनके किराना दुकान के लिए माइक्रो प्लान स्वीकृत किया गया और उन्हें लगभग 20,000 रुपये मूल्य का किराना सामान उपलब्ध कराया गया, जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

शुरुआती दिनों में दुकान को संभालना आसान नहीं था। सीमित अनुभव, पूँजी की कमी और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना एक बड़ी चुनौती थी। इसके बावजूद मुनिया दीदी ने हार नहीं मानी। वह सुबह से शाम तक दुकान चलातीं है। उनकी मेहनत रंग लाई और दुकान से आय बढ़ने लगी।

आज वह प्रतिदिन लगभग 700 से 800 रुपये की बिक्री करती है जिससे प्रतिमाह करीब 7,000 से 8,000 रुपये की आय अर्जित कर रही हैं। इस आय ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया, बल्कि उन्हें आगे बढ़ने का आत्मविश्वास भी दिया। उन्होंने समूह से ऋण लेकर एक और छोटा व्यवसाय शुरू किया, जिससे उनकी आय के स्रोत और बढ़ गए। अब वह नियमित रूप से बचत भी करती हैं और बैंकिंग प्रणाली से जुड़कर आर्थिक रूप से सशक्त भी हो रही हैं।

उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठायी है। उनके बेटे की पढ़ाई जारी है और वह उसे आत्मनिर्भर बनाना चाहती हैं।

मुनिया दीदी कहती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना उनके जीवन में एक नया सवेरा लेकर आया है। जीविका के सहयोग, समूह की एकजुटता और निरंतर मार्गदर्शन ने उन्हें गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकलने में मदद की। अब वह न केवल अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही हैं, बल्कि समाज में भी एक सम्मानजनक पहचान बना चुकी हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार